

बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – पंचम

दिनांक 31-08-2020

विषय – हिन्दी

विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज नीति के दोहे (कविता) के अन्तर्गत कबीर दास जी के दोहे का अपने शब्दों में अर्थ स्पष्ट करेंगे।

बुरा जो देखन में चला, बुरा न मिलिया कोय।

जो मन खोजा अपना, मुझ-सा बुरा न कोय।।

कबीर के दोहे का अर्थ: महान कवि कबीर दास जी ने अपने इस दोहे में कहा है कि मैं इस दुनिया में दूसरों की बुराई दूँढने निकला था। मगर, पता नहीं क्यों, मुझे सारे संसार में कोई बुरा व्यक्ति मिला ही नहीं। फिर मैंने अपने दिल में झाँककर देखा, तो मुझे पता चला कि इस दुनिया में मुझसे बुरा कोई है ही नहीं, मैं ही सबसे बुरा प्राणी हूँ।

अपना उदाहरण देते हुए यहाँ कबीरदास जी ने समाज को शिक्षा दी है कि हे मानवों! इस दुनिया की बुराइयों को दूँढने से पहले अपनी बुराइयाँ दूँढो और उन्हें जड़ से खत्म कर दो। जब तुम ऐसा कर दोगे, तो तुम्हें इस पूरे संसार का कोई भी प्राणी बुरा नहीं लगेगा। इस तरह अपने दोहे में कबीर जी ने यह कामना की है कि हम सभी अपने मन में छिपी बुराइयों को पहचानें और उन्हें खत्म करने की दिशा में काम करें। जब हम सत्कर्म करेंगे, तभी तो हमारा मानव जन्म सफल होगा।

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।

यह सूक्ति निर्गुण भक्ति मार्गी कवि कबीरदास जी ने कही है कि सच्चाई से बढ़कर कोई तपस्या नहीं है। इस सूक्ति पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना आवश्यक है कि सच्चाई के समान या सच्चाई से बढ़कर कोई तपस्या नहीं है, तो कैसे और क्यों नहीं है?

सबसे पहले हमें सच्चाई का स्वरूप, अर्थ और प्रभाव को समझना होगा। सच्चाई का शाब्दिक अर्थ है- सत्य का स्वरूप या सत्यता। सत्य का स्वरूप क्या है और क्या हो सकता है, यह भी विचारणीय है। सच्चाई

शब्द या सच शब्द का उद्भव संस्कृत के सत शब्द में प्रत्यय लगा देने से बना है। यह सत्य शब्द संस्कृत का शब्द अस्ति के अर्थ से हैं, जिसका अर्थ क्रिया से है। अस्ति क्रिया का अर्थ होता है। इस क्रियार्थ को एक विशिष्ट अर्थ प्रदान किया गया कि जो भूत, वर्तमान और भविष्य में भी रहे या बना रहे, वही सत्य है।

सत्य का स्वरूप बहुत ही विस्तृत और महान होता है। सत्य के सच्चे स्वरूप का ज्ञान हमें तब हो सकता है, जब हम असत्य का ज्ञान प्राप्त कर लें। असत्य से हमें क्या हानि होती है और असत्य हमारे लिए कितना निर्मम और दुखद होता है। इसका बोध जब हमें भली भाँति हो जायेगा तब हम सत्य की महानता का बोध स्वयं कर सकेंगे। गोस्वामी तुलसीदास ने इस संदर्भ में एक बहुत ही उच्चकोटि की सूक्ति प्रस्तुत की है-

अर्थ लिखकर याद करें।